सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, बिहार
प्रेस विज्ञप्ति

संख्या–**cm-122**
16/03/2018

आयुर्वेद का बिहार की भूमि से पुराना रिश्ता :– मुख्यमंत्री

पटना, 16 मार्च 2018 :– मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार ने ज्ञान भवन स्थित अशोक कन्वेंशन केन्द्र में आयोजित तीन दिवसीय छठे आयुर्वेद पर्व का दीप प्रज्ज्वलित कर उद्घाटन किया। तीन दिवसीय आयुर्वेद पर्व के उद्घाटन के अवसर पर मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार ने सबसे पहले आयुर्वेद प्रवर्तक भगवान धन्वन्तरी की तस्वीर पर माल्यार्पण कर उन्हें नमन किया। अखिल भारतीय आयुर्वेदिक महासम्मेलन के अध्यक्ष सह राष्ट्रीय पर्व के चेयर पर्सन पद्म भूषण वैद्य देवेन्द्र त्रिगुणा एवं वैद्य धंनजय शर्मा ने मुख्यमंत्री को अंगवस्त्र, पुष्प–गुच्छ एवं प्रतीक चिन्ह भेंटकर अभिनन्दन किया। आयुष मंत्रालय भारत सरकार, अखिल भारतीय आयुर्वेदिक महासम्मेलन और बिहार सरकार स्वास्थ्य विभाग के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित राष्ट्रीय पर्व के मौके पर मुख्यमंत्री सहित मंच पर मौजूद अतिथियों ने स्मारिका का विमोचन किया।

मुख्यमंत्री ने छठे आयुर्वेद पर्व में वैद्य डॉ0 जगन्नाथ त्रिपाठी, वैद्य इंदु मिश्रा, वैद्य यशवंत सिंह, वैद्य अजमत हुसैन अंसारी और वैद्य अलख नारायण सिंह को धन्वन्तरी सम्मान से सम्मानित किया। अखिल भारतीय आयुर्वेदिक महासम्मेलन के अध्यक्ष एवं छठे राष्ट्रीय पर्व के अध्यक्ष पद्म भूषण वैद्य देवेन्द्र त्रिगुणा को मुख्यमंत्री ने पुष्प–गुच्छ, अंगवस्त्र एवं स्मृति चिह्न भेंटकर स्वागत किया।

छठे आयुर्वेद पर्व को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि मुझे इस कार्यक्रम में उपस्थित होकर काफी खुशी हो रही है। उन्होंने कहा कि अखिल भारतीय आयुर्वेदिक महासम्मेलन के द्वारा देश के विभिन्न हिस्सों में इस तरह के कार्यक्रमों का आयोजन होता रहा है। बिहार में छठे आयुर्वेद पर्व का आयोजन किया गया है, जिससे लोगों को काफी लाभ होगा। उन्होंने कहा कि इस तरह के कार्यक्रम से आयुर्वेद से जुड़े लोगों और इसमें दिलचस्पी रखने वाले लोगों को काफी प्रसन्नता होगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि इस तीन दिवसीय आयुर्वेद पर्व के माध्यम से अपनी पुरानी चिकित्सा पद्धति से नई पीढ़ी के लोग जागरूक होंगे और उनमे जागृति आएगी। उन्होंने कहा कि भारत में आयुष मंत्रालय बना है, यह अच्छी बात है, जिसमें आयुर्वेद, यूनानी जैसी अनेक देशी और पुरानी चिकित्सा पद्धतियों की महत्ता को ध्यान में रखते हुए शामिल किया गया है ताकि उसका उपयोग हो सके।

मुख्यमंत्री ने कहा कि हमलोगों के यहाँ आयुष चिकित्सक बड़ी संख्या में कार्यरत हैं। बचपन से ही व्यक्तिगत एवं भावनात्मक रूप से आयुर्वेद से हमारा संबंध है। उन्होंने कहा कि हमारे पिताजी पटना राजकीय आयुर्वेदिक कॉलेज के प्रोडक्ट थे, जो उसके शासी निकाय से भी जुड़े रहें, उनका रिश्ता स्वतंत्रता संग्राम से रहा और कई बार उन्हें जेल भी जाना पड़ा। मुख्यमंत्री ने कहा कि जब हम स्कूल में पढ़ते थे तो देखते थे कि पिताजी खुद दवा बनाकर लोगों का इलाज करते थे। वह खुद चूर्ण को पुड़िया में बांधकर लोगों को दवा देते थे। जब मैं पढ़कर शाम में स्कूल से लौटता था तो मैं भी पुड़िया बनाता था। उन्होंने कहा कि बचपन से ही हम अच्छा पुड़िया बनाते हैं जो फेंकने पर भी नहीं खुलेगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि आयुर्वेद अद्भूत विज्ञान है, यह मैं बचपन से ही जानता हूँ। बचपन में मैं देखता था कि पिताजी नब्ज पकड़कर ही तकलीफ बताते थे, इसमें कफ, पित्त और नाड़ी के संतुलन का

अध्ययन करके इलाज किया जाता है। आयुर्वेद में इलाज का यही मूल तरीका है। उन्होंने कहा कि अगर कफ, पित्त और नाड़ी में संतुलन है तो फिर आप स्वस्थ हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि आयुर्वेद का बिहार की भूमि से बड़ा पुराना रिश्ता रहा है। राजगीर निवासी आचार्य जीवक और चाणक्य तक्षशिला में पढ़े थे जो पाकिस्तान में हैं। माना जाता है कि आचार्य जीवक भगवान बुद्ध का इलाज भी किये थे। उन्होंने कहा कि आयुर्वेद देशी चिकित्सा पद्दति है और इसकी बहुत प्रतिष्ठा रही है। मुख्यमंत्री ने कहा कि जब मैं बच्चा था तो देखता था कि एलोपैथ में बहुत कम डॉक्टर थे लेकिन धीरे–धीरे लोगों का ध्यान एलोपैथिक चिकित्सा की तरफ बढ़ने लगा। वह बहुत वैज्ञानिक है और निरंतर अनुसंधान के चलते लोगों का आकर्षण एलोपैथ की तरफ तेजी से हुआ है। मुख्यमंत्री ने कहा कि जो आयुर्वेद में दम है, वह अन्य चिकित्सा पद्धति में नहीं है लेकिन जितना अनुसंधान इस क्षेत्र में होना चाहिए, उतना नहीं हुआ। उन्होंने कहा कि मुझे पूरी उम्मीद है कि इस महासम्मेलन में आयुर्वेद पर अनुसंधान की महत्ता एवं गंभीरता को समझते हुए विशेष तौर से चर्चा की जायेगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि इस दिशा में अनुसंधान होगा तो बहुत सारी नई बीमारियों का इलाज भी इस चिकित्सा पद्धति के माध्यम से संभव हो सकेगा। उन्होंने कहा कि बीमारी न हो इसके लिए दिनचर्या, खान–पान एवं आचार व्यवहार का कांसेप्ट होना चाहिए, जिसे प्रचारित करने की जरूरत है ताकि लोगों में स्वास्थ्य के प्रति जागृति आ सके। हमलोग चाहेंगे जितने भी बिहार में आयुर्वेदिक कॉलेज हैं, सब ठीक से कार्यरत हो जाय। उन्होंने कहा कि मुझे जानकर प्रसन्नता होती है कि बड़ी संख्या में लड़कियाँ और लड़के इस चिकित्सा पद्धति में पढ़ाई कर रहे हैं, ऐसे में अनुसंधान की तरफ नई पीढ़ी के लोगों का रुझान अवश्य होगा।

मुख्यमंत्री ने कहा कि एलोपैथ का इतना ज्यादा प्रचार हो गया है कि दूसरी चिकित्सा पद्धति में शिक्षित और प्रशिक्षित लोग भी डायवर्ट करते हैं लेकिन ऐसा नहीं होना चाहिए क्योंकि आयुर्वेद हो, यूनानी हो या अन्य जो भी पुरानी और देशी चिकित्सा पद्धतियाँ हैं, सबकी अपनी अहमियत है। ऐसे में आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति ऐतिहासिक और वैज्ञानिक है। उन्होंने कहा कि बहुत सारे लोग असहजता महसूस करते हैं कि एलोपैथ वाले डॉक्टर कहलाते हैं और हजारों वर्ष पुरानी चिकित्सा प्रणाली वाले वैद्य। ऐसी फीलिंग मन से निकाल देनी चाहिए और मजबूती का एहसास होना चाहिए क्योंकि एलोपैथ में इलाज से थकने के बाद लोग आयुर्वेद का सहारा लेते हैं इसलिए आपमें ज्यादा दम है। आयुर्वेद में शिक्षित प्रशिक्षित होने वाली नई पीढ़ी के लोगों से अपील करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि अनुसंधान की तरफ भी जरुर ध्यान दीजिएगा।

मुख्यमंत्री ने कहा कि पटना का राजकीय आयुर्वेदिक कॉलेज काफी पुराना है, जिसे भारत सरकार ने पहले ही अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान के रूप में परिणित करने फैसला लिया है। हमें इस निर्णय से काफी प्रसन्नता है और हमलोग इसके लिए हरसंभव मदद देने के लिए तैयार है जरूरत पड़े तो राज्य सरकार अंशदान भी देगी लेकिन अभी भी इस सन्दर्भ में कागज पेंडिंग है। उन्होंने कहा कि इस कार्यक्रम में केन्द्रीय राज्य मंत्री, स्वतंत्र प्रभार श्रीपद नाइक भी सम्मिलित होने वाले थे, उनके समक्ष इस मसले को रखने की बात मैंने पहले से ही सोच रखी थी लेकिन किन्ही कारणों से वे नहीं आ सके तो मैं संयुक्त सचिव रौशन जग्गी जी से कहूँगा कि पटना राजकीय आयुर्वेदिक कॉलेज को अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान के रूप में परिणत करिए क्योंकि यह हमारी इच्छा है और इससे हमारा भावनात्मक जुड़ाव भी है। संयुक्त सचिव से आग्रह करते हुए उन्होंने कहा कि आयुष चिकित्सकों में आत्म सम्मान का भाव आ सके, इसके लिए आप जिस प्रकार एलोपैथिक चिकित्सकों को सुविधाएं मुहैया कराते हैं, उसी प्रकार आयुष और यूनानी चिकित्सकों का भी ख्याल रखें। उन्होंने कहा कि हमें दवा के बारे में काफी जानकारी है और जब कभी मैं आप के पास पहुँच जाऊँ तो आपसे इस विषय में पूछ भी सकता हूँ। उन्होंने कहा कि प्राकृतिक चिकित्सा भी विलुप्त हो गया था

लेकिन गाँधी जी जब साउथ अफ्रीका गए तो वहां से लिटरेचर लेकर आये तब इस पर काम शुरू हुआ।

आयुष चिकित्सकों से अपील करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि अपने इस विशिष्टता को समझिये और गर्व कीजिये तभी इस आयुर्वेद पर्व की उपलब्धि मानी जायेगी। उन्होंने कहा कि यहाँ हम छठा आयुर्वेद पर्व मना रहे हैं लेकिन जिला स्तर पर भी इस तरह का कार्यक्रम होना चाहिए। अपने संबोधन के अंत में इस तीन दिवसीय छठे आयुर्वेद पर्व की सफलता की शुभकामना देते हुए मुख्यमंत्री ने आयोजकों को बधाई दी।

समारोह को स्वास्थ्य मंत्री श्री मंगल पाण्डेय, प्रधान सचिव स्वास्थ्य श्री संजय कुमार, आयुष विभाग भारत सरकार के संयुक्त सचिव श्री रौशन जग्गी, वैद्य बनवारी लाल गौड़, अखिल भारतीय आयुर्वेदिक महासम्मेलन के अध्यक्ष पद्म भूषण वैद्य देंवेंद्र त्रिगुणा ने भी सम्बोधित किया।

इस अवसर पर वैद्य बनवारी लाल गौड़, आर्यभट्ट ज्ञान विश्वविद्यालय के पूर्व प्रति कुलपति एवं बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के सदस्य श्री उदयकांत मिश्र, मुख्यमंत्री के सचिव श्री मनीष कुमार वर्मा, अखिल भारतीय आयुर्वेदिक महासम्मेलन के जेनेरल सेक्रेटरी श्री दीनानाथ उपाध्याय, रणजीत पौराणिक, वैद्य प्रभात कुमार, जिलाधिकारी कुमार रवि सहित देश के विभिन्न हिस्सों एवं वियतनाम से आये डेलीगेट्स एवं छात्र–छात्राएं मौजूद थी।

******